

॥ अथ शिवसङ्कल्प स्रोतम् ॥

छः मन्त्रों में ईश्वर से मन के विकारों को दूर रखने लिए और मन के सभी विचारों को सकारात्मक बनाए रखने के लिए मनोबल प्रदान करने की प्रार्थना की गई है। हम निश्चल धर्म मार्ग पर चलते हुए मोक्ष प्राप्ति के लिए सतत प्रयास करते रहें और जीवन भर नकारात्मक विध्वंसकारी विचारों को अपने से दूर रखें।

४२ मात्राओं वाले विराडाक्षी त्रिष्टुप् छन्द व धैवत स्वर में निबद्ध प्रथम मन्त्र में चंचल मन का प्रयोग केवल ज्ञान अर्जन के कर अपने विचारों को सकारात्मक रखने के लिए प्रार्थना है।

शिवसङ्कल्प ऋषिः। मनो देवता।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१॥

यजुः ३४:१

यत्। जाग्रतः। दूरम्। उदैतीत्युत्प्रेति। दैवम्। तत्। ऊँ इत्यूँ। सुप्तस्य। तथा। एव। एति॥  
दूरङ्गममिति दूरम्ङ्गमम्। ज्योतिषाम्। ज्योतिः। एकम्। तत्। मे। मनः। शिवसङ्कल्पमिति  
शिवसङ्कल्पम्। अस्तु॥१॥

हे ईश्वर! (दैवम्) दिव्य गुणों वाला (तत्) यह (मे) मेरा (मनः) मन (यत्) जो (जाग्रतः) जागृत अवस्था में मुझे क्षणमात्र में (दूरम्) दूर के स्थानों (उत्प्रेति) पर ले जाता है (एव) और (सुप्तस्य) सोते हुए भी (तथा) ऐसा (ऊँ) ही (एति) करता है; जो (दूरम्ङ्गमम्) दूर प्रदेशों का (ज्योतिषाम्) ज्ञान मुझ तक लाता और (तत्) उस (ज्योतिः) ज्योतिस्वरूप परम पिता (एकम्) एकमात्र परमेश्वर से मेरा एकीकार कराता है; मेरे उस मन के सारे (शिवसङ्कल्पम्) संकल्प परोपकारी व सकारात्मक (अस्तु) हों।

४४ मात्राओं वाले आर्षी त्रिष्टुप् छन्द व धैवत स्वर में निबद्ध दूसरे मन्त्र में मन के गुणों और सामर्थ्य पर विचार किया गया है।

शिवसङ्कल्प ऋषिः। मनो देवता।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।

यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥

यजुः ३४:२

येन। कर्माणि। अपसः। मनीषिणः। यज्ञे। कृण्वन्ति। विदथेषु। धीराः॥ यत्। अपूर्वम्। यक्षम्। अन्तरित्यन्तः। प्रजानामिति प्रजानाम्। तत्। मे। मनः। शिवसङ्कल्पमिति शिवसङ्कल्पम्। अस्तु॥२॥

(येन) जिसके द्वारा (धीराः) धैर्यवान मनुष्य (मनीषिणः) इन्द्रियों को संकुचित कर (विदथेषु) ज्ञान विज्ञान को बढ़ाने के लिए व बुराईयों से लड़ते हुए (यज्ञे) यज्ञ की भावना से (अपसः) धर्म के अनुसार (कर्माणि) कर्म (कृण्वन्ति) करते हैं; (यत्) वह जो (यक्षम्) पूजनीय परमात्मा का साक्षात्कार करने के (अपूर्वम्) विलक्षण सामर्थ्य वाला (प्रज्ञानाम्) सभी मनुष्यों के (अन्तः) अन्तःकरण में विद्यमान है; (मे) मेरे (तत्) उस (मनः) मन के सारे (शिवसङ्कल्पम्) संकल्प परोपकारी व सकारात्मक (अस्तु) हों।

४६ मात्राओं वाले स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छन्द व धैवत स्वर में निबद्ध तीसरे मन्त्र में मन के गुणों और सामर्थ्य पर विचार किया गया है।

शिवसङ्कल्प ऋषिः। मनो देवता।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।

यस्मान्नऋते किं चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥३॥ यजुः ३४:३

यत्। प्रज्ञानमिति प्रज्ञानम्। उत। चेतः। धृतिः। च। यत्। ज्योतिः। अन्तः। अमृतम्। प्रजास्विति प्रजासु॥ यस्मात्। न। ऋते। किम्। चन। कर्म। क्रियते। तत्। मे। मनः। शिवसङ्कल्पमिति शिवसङ्कल्पम्। अस्तु॥३॥

(यत्) जिस मन के द्वारा ही (प्रज्ञानम्) इन्द्रियों से अनुभव किया गया लौकिक ज्ञान मनुष्य समझ सकता है, (उत) जिसके द्वारा (चेतः) आत्मा की चेतना शरीर में पहुँचती है (च) और अस्मिता का भान होता है, जिसमे (धृतिः) धैर्य और दृढ़ता बनती है, (यत्) वह (ज्योतिः) प्रकाशस्वरूप जो (अन्तः) सूक्ष्म शरीर का भाग होने के कारण मोक्ष या प्रलय होने तक आत्मा के साथ रहता हुआ लगभग (अमृतम्) अमर है, (यस्मात्) जिसके (ऋते) बिना (प्रजासु) मनुष्य (किम्) कोई (चन) भी (कर्म) कर्म (न) नहीं (क्रियते) कर सकता, (मे) मेरे (तत्) उस (मनः) मन के सारे (शिवसङ्कल्पम्) संकल्प परोपकारी व सकारात्मक (अस्तु) हों।

४४ मात्राओं वाले त्रिष्टुप् छन्द व धैवत स्वर में निबद्ध चौथे मन्त्र में मन की सार्थकता पर विचार किया गया है।

शिवसङ्कल्प ऋषिः। मनो देवता।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।

येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥४॥

यजुः ३४:४

येन'। इदम्। भूतम्। भुवनम्। भविष्यत्। परिगृहीतमिति' परिगृहीतम्। अमृतेन। सर्वम्॥ येन'। यज्ञः। तायते'। सप्तहोतेति' सप्तहोता। तत्। मे। मनः। शिवसङ्कल्पमिति' शिवसङ्कल्पम्। अस्तु॥४॥

(अमृतेन) स्थूल शरीर के साथ नष्ट न होने और नाशरहित परमात्मा से एकीकार कराने वाले (येन) जिस मन के द्वारा (इदम्) इस जगत में (भूतम्) भूतकाल, (भुवनम्) वर्तमान और (भविष्यत्) भविष्य काल का (सर्वम्) सब ज्ञान मनुष्य (परिगृहीतम्) चारों ओर से ग्रहण करता है, (येन) जिसके द्वारा (सप्तहोता) सात ऋषियों\* की निगरानी में जीवात्मा के (यज्ञः) जीवन यज्ञ का (तायते) विस्तार होता है, (मे) मेरे (तत्) उस (मनः) मन के सारे (शिवसङ्कल्पम्) संकल्प परोपकारी व सकारात्मक (अस्तु) होकर मुझे मोक्ष की ओर ले जाने वाले हों।

\*सात ऋषियों की व्याख्या विद्वानों ने अलग अलग प्रकार से की है। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, अस्मिता व बुद्धि को शरीर के सात ऋषि मान सकते हैं। दो आँख, दो कान, दो नसिका छिद्र और एक मुख की गणना भी सात हो जाती है। महर्षि दयानन्द ने पाँच प्राण (प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान), छठा जीवात्मा और सातवाँ अव्यक्त प्रकृति को शरीर के ऋषि माना है।

४४ मात्राओं वाले त्रिष्टुप् छन्द व धैवत स्वर में निबद्ध पाँचवे मन्त्र में मन की ज्ञानात्मकता पर विचार किया गया है।

शिवसङ्कल्प ऋषिः। मनो देवता।

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।

यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥५॥

यजुः ३४:५

यस्मिन्। ऋचः। साम। यजूंषि। यस्मिन्। प्रतिष्ठिता। प्रतिस्थितेति' प्रतिस्थिता। रथनाभाविवेति' रथनाभौडव। अराः॥ यस्मिन्। चित्तम्। सर्वम्। ओतमित्याडतम्। प्रजानामिति' प्रजानाम्। तत्। मे। मनः। शिवसङ्कल्पमिति' शिवसङ्कल्पम्। अस्तु॥५॥

(रथनाभौडव) जैसे रथ के पहियों की (अराः) तीलियाँ, पहिये को धुरी पर स्थिर रखती हैं ऐसे ही (यस्मिन्) जिस मन में (ऋचः) ऋग्वेद, (साम) सामवेद, (यजूंषि) यजुर्वेद और (यस्मिन्) अथर्ववेद का ज्ञान (प्रतिस्थिता) स्थित है, जिसमे विकार आने से सारी उपासना ही बिखर जाती है, (यस्मिन्) जिससे (प्रजानाम्) प्राणियों के (चित्तम्) चित्त में (सर्वम्) सभी पदार्थों का ज्ञान (आडतम्) फैलता है, (मे) मेरे (तत्) उस (मनः) मन के सारे (शिवसङ्कल्पम्) संकल्प परोपकारी व सकारात्मक (अस्तु) होकर मुझे ज्ञान मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते रहें।

४६ मात्राओं वाले स्वराट् त्रिष्टुप् छन्द व धैवत स्वर में निबद्ध छोटे मन्त्र में मन को दृढ़ रखने का निर्देश दिया गया है ।

शिवसङ्कल्प ऋषिः। मनो देवता ।

सुषारथिरश्वानिव्र यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव ।

हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥६॥

यजुः ३४:६

सुषारथिः । सुसारथिरिति सुऽसारथिः । अश्वानिवेत्यश्वान्ऽइव । यत् । मनुष्यान् । नेनीयते ।

अभीशुभिरित्यभीशुऽभिः । वाजिनऽइवेति वाजिनऽइव ॥ हृत्प्रतिष्ठम् । हृत्प्रतिस्थमिति हृत्ऽप्रतिस्थम् । यत् । अजिरम् । जविष्ठम् । तत् । मे । मनः । शिवसङ्कल्पमिति शिवऽसङ्कल्पम् । अस्तु ॥६॥

(यत्) जैसे एक (सुऽसारथिः) कुशल सारथी (वाजिनऽइव) तेज दौड़ने वाले (अश्वान्ऽइव) घोड़ों को (अभीशुऽभिः) लगाम लगाकर अपनी इच्छा से (नेनीयते) घुमाता हैं वैसे ही (मनुष्यान्) मनुष्यों को अपने (अजिरम्) चञ्चल (जविष्ठम्) गतिशील मन को दृढ़ रखना चाहिए । दृढ़ मन हमें धर्म मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है और बेकाबू मन हमारे जीवन को लक्ष्य से भटका देता है । वह मन जो हमें उन विषयों पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायता करता है (यत्) जिनके लिए हमारे (हृत्ऽप्रतिस्थम्) हृदय में श्रद्धा है, (मे) मेरे (तत्) उस (मनः) मन के सारे (शिवऽसङ्कल्पम्) संकल्प परोपकारी व सकारात्मक (अस्तु) होकर मुझे दृढ़ निश्चय वाला बनाएं ।

॥ इति शिवसङ्कल्प स्रोतम् ॥